

## खेती का बोझ घटाने लाएंगे औद्योगिक क्रांति : नरेन्द्र मोदी

पांचवे चरण के बाद साफ हुई तस्वीर, एक बार फिर लौट रही भाजपा सरकार

भोपाल 21 मई (प्रेस इंफार्मेशन सेंटर)। देश में चल रहे आम चुनावों में एक बार फिर तय हो गया है कि भारतीय जनता पार्टी की भाजपा सरकार तीसरी बार सत्ता में लौट रही है। व्यापक मतदान के बीच चुनाव का पांचवा चरण पूरा हो गया है। अब 25 मई को छठवें चरण और 1 जून को सातवें चरण के वोट डाले जाएंगे। 25 मई को आठ राज्यों की 58 संसदीय सीटों पर और 1 जून को आठ राज्यों की 57 सीटों पर मतदान होगा।

लगातार 2 बार ऐतिहासिक जनादेश हासिल करने के बाद अब मोदी सरकार तीसरी बार सत्ता में वापसी करने जा रही है और वो भी एक पर्वत से दिखने वाले लक्ष्य को सामने रखकर। मोदी सरकार का अबकी बार 400 पार का ये संकल्प ऐसे वक्त में है, जब विपक्ष न तो 2014 के चुनावों जैसा नदारद है और न ही 2019 जैसा बिखरा हुआ, क्योंकि आज इंडी गठबंधन का मोर्चा सामने है।

ऐसे में BJP के लिए ये चुनाव पिछले दो चुनावों से कैसे अलग है और अगर PM मोदी तीसरी बार भी देश की बागडोर संभालते हैं तो उनका विजन क्या है। कैसे वो भारत को विकसित देश बनाएंगे, ग्लोबल मैप पर भारत की साख को और मजबूत कैसे बनाएंगे।

राजनीति से लेकर आर्थिक, इंफ्रास्ट्रक्चर से लेकर आम आदमी के मुद्दों पर चुनावों के बीच में और नतीजों से पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ NDTV के एडिटर-इन-चीफ संजय पुगलिया की अब तक की सबसे बेबाक और संजीदा बातचीत।

संजय पुगलिया: NDTV के दर्शकों का स्वागत है, ये बेहद खास मुलाकात भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ, सर आपने व्यस्तता के बीच समय निकाला, आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

नरेन्द्र मोदी: नमस्कार संजय जी और NDTV के सभी दर्शकों को मेरा नमस्कार

संजय पुगलिया: सर अब हम 6 चैनल और 7 डिजिटल प्लेटफॉर्म का एक बड़ा नेटवर्क हो गए हैं। अभी हमने NDTV मराठी भी लॉन्च किया और एक बिजनेस चैनल भी है, बाकी तो सब पता ही है आपको। तो एक नए नेटवर्क के रूप में हम उभर रहे हैं। और हमको लगता है कि आपने जितनी बातें कही हैं। उसका एक निचोड़ निकालने का इस चर्चा में हम प्रयास करें,

मेरा पहला सवाल आपसे ये होगा आपने 2 वाक्यों का प्रयोग किया कि



अब अयोध्या में 1000 साल की बुनियाद रखी जा रही है और 100 साल का एजेंडा बन रहा है जो मोदी युग के तीसरे अध्याय में इसकी झलक मिलेगी। 2047 की बात तो आप करते ही हैं। गवर्नंस में इस बार आपका सबसे बड़ा फोकस क्या होने जा रहा है।

नरेन्द्र मोदी: आपने देखा होगा कि मैं टुकड़ों में नहीं सोचता हूँ, और मेरा बड़ा कॉम्प्रिहेंसिव और इंटीग्रेटेड एप्रोच होता है। दूसरा, सिर्फ मीडिया अटेंशन के लिए काम करना, ये मेरी आदत में नहीं है। मुझे लगा कि किसी भी देश के जीवन में कुछ टर्निंग प्वाइंट्स आते हैं, अगर हम उसे पकड़ लें तो बहुत बड़ा फायदा होता है। व्यक्तिगत जीवन में भी, उत्साह बढ़ जाता है, नई चीज बन जाती है। वैसे ही जब हम आजादी की 75वीं सालगिरह मना रहे थे, तब मेरे में सिर्फ 75 साल तक सीमित नहीं था, मेरे मन में आजादी के 100 साल थे। मैंने सभी संस्थाओं से पूछा कि देश जब 100 साल का होगा तब आप क्या करोगे, आप अपनी संस्था को कहां ले जाएंगे।

जैसे अभी 90 साल का एक कार्यक्रम था RBI का तो मैं गया था। मैंने कहा, RBI जब 100 साल का होगा तब आप क्या करेंगे, देश जब 100 साल का होगा तब आप क्या करेंगे। हमने अगले 25 साल को यानी 2047 को ध्यान में रखते हुए लाखों लोगों से बात की, एक महामंथन किया। 15-20 लाख सुझाव मुझे यूथ से आए हैं। एक बहुत बड़ी एक्सप्रेसिज हुई, कुछ तो अफसर रिटायर्ड भी हो गए, इतने

लंबे समय से मैं इस काम को कर रहा हूँ। मंत्रियों, सचिवों, एक्सपर्ट्स सबके सुझाव हमने लिए हैं।

उसको भी हमने बांटा है, पहले 25 साल, 5 साल, 1 साल और 100 दिन, चरणबद्ध तरीके से इसका एक खाका तैयार किया है। इसमें कई चीजें जुड़ेंगी, कुछ चीजें छोड़नी पड़ सकती हैं, लेकिन मोटा-मोटा हमको पता है कि कैसे होगा। हमने 25 दिन अभी इसमें और जोड़े हैं। मैंने देखा कि यूथ बहुत उत्साहित है। उमंग को अगर चैनेलाइज कर देते हैं, तो अतिरिक्त फायदा मिल जाता है। इसलिए मैं 100 दिन प्लस 25 दिन, 125 दिन काम करना चाहता हूँ।

अभी हमने MyBharat लॉन्च किया है, आने वाले दिनों में माय भारत को किस प्रकार से देश के युवा को जोड़ें, और मैं युवा शक्ति को बड़े सपने देखने की आदत डालूँ, युवाओं के बड़े सपने साकार करने के लिए उनकी आदतों में कैसे बदलाव लाऊँ। उस पर मैं फोकस करना चाहता हूँ।

मैं मानता हूँ कि इन सारे प्रयासों का परिणाम होगा। मैं विरासत और विकास दोनों को जोड़कर चलता हूँ। तब मैंने लाल किले से भी कहा था और आज मैं दोबारा कह रहा हूँ कि अब देश कुछ ऐसी घटनाएं घटीं, जिसने 1000 साल तक हमको बड़ी विचलित अवस्था में जीने को मजबूर कर दिया। अब वो घटनाएं घट रही हैं, जो हमें 1000 साल के लिए उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जा रही हैं। तो मेरे मन में साफ है कि ये समय हमारा है, ये भारत का समय है, अब ये मौका हमें छोड़ना नहीं चाहिए।

संजय पुगलिया: आपने बिल्कुल

ठीक है और इसके लिए जो बिल्डिंग ब्लॉक्स हैं, एक जो बड़ी चीज उभरकर आई वो था इंफ्रास्ट्रक्चर पर काम, सड़क, पुल, हाईवे 60 परसेंट से ज्यादा बन गए। एयरपोर्ट डबल हो गए, लोग बहुत ट्रैवल कर रहे हैं। दरअसल, ये सब इतनी तेजी से बना, उसके बाद भी सब छोटे पड़ रहे हैं। तो आप इसको अभी इंक्रिमेंटल ग्रोथ देखते हैं, या कोई नया फोकस आपके मन में हैं।

नरेन्द्र मोदी: एक तो आजादी के बाद, लोग तुलना करते हैं कि जो देश हमारे साथ आजाद हुए, वो इतना आगे निकल गए, हम क्यों नहीं निकल पाए। दूसरा गरीबी को हमने एक वरदान बना लिया, ठीक है चलता है, क्या है...

एक बड़ा और दूर का सोचना, शायद गुलामी के दबाव में कहो या भारत के लोगों का मन ही नहीं है, इसी मिजाज में हम चलते रहे। मैं मानता हूँ कि इंफ्रास्ट्रक्चर का दुरुपयोग हमारे देश में बहुत हुआ, इंफ्रास्ट्रक्चर का पहले मतलब ये होता था कि जितना बड़ा प्रोजेक्ट उतनी ज्यादा मलाई। ये मलाई फैक्टर से इंफ्रास्ट्रक्चर जुड़ गया था, उस कारण से देश तबाह हो गया, और मैंने देखा कि सालों तक भी इंफ्रास्ट्रक्चर या तो कागज पर है या तो वहां एक पत्थर लगा हुआ है, शिलान्यास हुआ है। जब मैं आया तो मैंने प्रगति नाम का मेरा एक रेगुलर प्रोग्राम था। मैं रेगुलर इसे रिव्यू करने लगा, और इसे गति देने लगा।

कुछ हमारा माइंडसेट, हमारी ब्यू-रोक्रेसी, सरदार साहब (सरदार वल्लभ भाई पटेल) ने कुछ कोशिश की थी। वो लंबे समय तक रहते तो हमारी सरकारी व्यवस्थाओं का जो मूलभूत खाका होता

है, उसमें बदलाव आता। वो नहीं आया। ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट यानी गवर्नमेंट अफसरों की ट्रेनिंग का होगा। सरकारी अफसर को ये पता होना चाहिए कि उसकी लाइफ का परपज क्या है। ये तो नहीं कि मेरा प्रोमोशन कब होगा या अच्छा डिपार्टमेंट कब मिलेगा, वो यहां तक सीमित नहीं हो सकता है।

तो ह्यूमन रिसोर्स डेवलपमेंट के लिए हम टेक्नोलॉजी कैसे लाए, इस पर हमारा काम है। एक प्रकार से इंफ्रास्ट्रक्चर में भी, फिजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर, सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर, टेक्नोलॉजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर। अब इंफ्रास्ट्रक्चर के तीन स्टेप में भी एक और बात है मेरे मन में, एक तो स्कोप बहुत बड़ा होना चाहिए, टुकड़ों में नहीं होना चाहिए। दूसरा स्केल बहुत बड़ा होना चाहिए और स्पीड भी उसके अनुसार होना चाहिए। यानी स्कोप, स्केल और स्पीड, उसके साथ स्केल होनी चाहिए। अगर ये चारों चीजें हम मिला लेते हैं, मैं समझता हूँ कि हम बहुत अचीव कर लेते हैं। और मेरी कोशिश यही होती है, स्केल भी हो, स्केल भी हो, और स्पीड भी हो और कोई स्कोप जाने नहीं देना चाहिए। ये मेरी कोशिश रहती है।

अब देखिए हमारे कैबिनेट के निर्णय, पहले कैबिनेट के नोट बनने में तीन महीने लग जाते थे। मैंने कहा- ऐसा नहीं चलेगा, पहले बताइए, कहां रुकावट है। धीरे-धीरे करते करते मैं इसे 30 दिन ले आया। हो सकता है आने वाले दिनों में मैं इसे और कम कर दूंगा। स्पीड का मतलब ये नहीं है कि सिर्फ कंस्ट्रक्शन की स्पीड बढ़े, निर्णय और प्रक्रियाओं में भी गति आनी चाहिए। हर चीज की तरफ मैं ध्यान केंद्रित करता हूँ।

आपको ध्यान होगा, जिस पर बहुत कम लोगों का है। मैं मानता हूँ कि आप एक पूरा टीवी प्रोग्राम कर सकते हैं इस पर, इसका नाम है गतिशक्ति। जैसे दुनिया में हमारे डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर की चर्चा होती है। लेकिन गतिशक्ति की उतनी चर्चा नहीं है। टेक्नोलॉजी का एक अद्भुत उपयोग, स्पेस टेक्नोलॉजी का एक अद्भुत उपयोग, और भारत में कहीं पर भी इंफ्रास्ट्रक्चर का प्रोजेक्ट करना है, लॉजिस्टिक्स खर्च को कम करना है, लॉजिस्टिक्स सपोर्ट बढ़ाना है। गतिशक्ति एक ऐसा प्लेटफॉर्म है। जब मैंने पहली बार इसको लॉन्च किया तो राज्यों के चीफ सेक्रेटरीज खुश हो गए। हमारी गतिशक्ति प्लेटफॉर्म पर जो डेटा है, 1600 लेयर्स हैं। कोई भी चीज डालेंगे तो 1600 लेयर्स से वेरिफाई होकर

राजनीतिक तिलिस्मों पर फतह का महायज्ञ

# जाम्मू बोदशाह

भोपाल, बुधवार, 21 मई 2024

## जनता ने तो चुन लिया मोदी मार्ग

मोदी सरकार को जनता तीसरी बार सत्ता में भेजने जा रही है। अब तक पांच चरणों के चुनाव में साफ हो गया है कि भाजपा और एनडीए गठबंधन भारी जनसमर्थन से सरकार में पहुंच रहा है। ये जनादेश देश के विकास का जनादेश होगा। पहली बार न तो कोई सहानुभूति की लहर है और न ही जाति धर्म के दलालों की जोड़ तोड़। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सीधे जनता से संवाद कर रहे हैं और कारगर संवाद के माध्यम से अपनी सरकार के कार्यकलापों का उल्लेख करके कार्यकाल का जनादेश जुटा रहे हैं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे.पी. नड्डा और अमित शाह के मार्गदर्शन में चल रहे इस महाभियान में दुनिया की सबसे विशाल लोकतांत्रिक पार्टी एक स्वर में चुनाव लड़ रही है। अंग्रेजों ने जब भारत के टुकड़े करके यहां धर्म आधारित फूट के बीज बोए थे तब उन्हें भी एहसास नहीं था कि कभी उनके तमाम प्रयासों को भारत का सनातन धता बता देगा। सनातन ने हमेशा से सभी धर्मों का सम्मान करना सिखाया है। वसुधैव कुटुंबकम का विचार पूरी दुनिया को परिवार मानने का संदेश देता है इसके बावजूद अंग्रेजों के प्रश्रय से पनपी कांग्रेस ने सतर सालों तक जाति, धर्म, भाषा का ऐसा वैमनस्य बोया कि जनता सिर फुटौवल में ही लगी रही। सबको एक करने का विचार लिए जनसंघ हो या राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ इनके करोड़ों कार्यकर्ताओं की पीढ़ियां खप गईं। गरीबी दूर करने का स्वप्न दिखाकर नेहरू गांधी परिवार ने लगातार सत्तर सालों तक बहुराष्ट्रीय कंपनियों को लूट का साझीदार बनाए रखा। बाबा रामदेव के पातंजलि आर्युवेद जैसे सैकड़ों प्रकल्पों ने देश को पहली बार बताया कि अहिंसात्मक चिकित्सा ही समाज को बेहतर जीवन दे सकती है। इसके पहले तो एलोपैथी के माध्यम से समाज को स्वास्थ्य प्रदान करने का ऐसा अभियान चलाया गया था कि लोगों को लगता था यदि उन्हें दवा नहीं मिली तो उनका जीवन नष्ट हो जाएगा। स्वयंसेवकों ने इतने विशाल देश को जीवन संयम की डोर में बांधकर जैसा पुनर्जागरण चलाया उन्हें समझाया कि सर्जरी जैसी उपचार विधि आपातकाल में जरूरी होती है स्वस्थ रहने के लिए तो जीवनशैली में बदलाव लाना होंगे। आज भी देश की बड़ी आबादी जीवनशैली जनित बीमारियों से ग्रस्त है। उन्हें नहीं मालूम कि बहुत छोटे उपाय उनका जीवन खुशहाल बना सकते हैं। नरेन्द्र मोदी अपने चुनाव प्रचार अभियान को लोकतंत्र का उत्सव बताते हैं। इसके विपरीत शैतान पर कंकर फेंकने की सोच से भरे कांग्रेस के राहुल गांधी बदतमीजी की भाषा में प्रधानमंत्री को गाली देते फिरते हैं। पश्चिम बंगाल में ममता बैनर्जी मुस्लिमों को उकसाकर दंगे करवाकर सत्ता में बने रहने का प्रयास कर रही हैं। अखिलेश यादव, की समाजवादी पार्टी हो या केरल के वामपंथी सभी लड़ने मारने पर उतारू हैं। इसके विपरीत भाजपा के प्रचारक अपनी वोटर सूची का पन्ना संभाले लोगों से मतदान की अपील कर रहे हैं। चुनाव अभियान का असर ये है कि कांग्रेस का निराश मतदाता तो पोलिंग बूथ तक भी नहीं पहुंच रहा है। उसे लगता है कि इंडी गठबंधन की विचारधारा समय के साथ पिछड़ गई है। धारा 370 हो या राममंदिर निर्माण जैसे तमाम मुद्दों पर इस गठबंधन की पहले ही करारी हार हो चुकी है। आज वह खलनायक बनकर समाज के बीच खड़ा है ऐसे में आम जनता उससे दूरी बनाकर रखने में ही अपनी भलाई समझ रही है। जाहिर है इसका सीधा लाभ एनडीए गठबंधन को ही मिलना है। भाजपा की राज्य इकाईयां भले ही अब तक विकास की मुख्यधारा को आत्मसात नहीं कर पाई हों लेकिन जिस तरह चुनाव प्रचार अभियान में हर बिंदु पर प्रवक्ता की तरह प्रकाश डाला गया उससे संगठन को बड़ा सहारा मिला है। मध्यप्रदेश में शिवराज सिंह चौहान की पूर्ववर्ती सरकार आत्मनिर्भरता के मुद्दे पर बहुत कुछ नहीं कर पाई थी। ऐसे में जनता के बीच असंतोष भी बढ़ गया था लेकिन चुनाव अभियान ने जनता से जिस तरह संवाद किया उससे वो नाराजगी दूर हो गई। डॉ. मोहन यादव की सरकार अभी तक अपना काम शुरू नहीं कर पाई है वह भी चुनाव अभियान की जिम्मेदारी उठाए हुए है। भाजपा का केन्द्रीय प्रचार अभियान इतना सफल जन शिक्षण कर रहा है कि उससे आम नागरिक तक को अपना लक्ष्य साफ नजर आने लगा है। मध्यप्रदेश की डॉ. मोहन यादव सरकार से देश को भारी अपेक्षाएं हैं। देखना है कि विकास की जो समझ देश के बीच विकसित हुई है उसकी कसौटी पर वर्तमान सरकार किस हद तक सफल होती है। फिलहाल मतदान के दो चरण बाकी हैं और बहुत सारी प्रमुख सीटों पर मतदान होना है। प्रचार की लय इतनी सुरीली है कि देश टकटकी लगाए उसे सुन रहा है। वोट कर रहा है। जाहिर है कि सकारात्मक अभियान अपने बड़े लक्ष्य को भी आसानी से वेध लेगा। एनडीए लगभग चार सौ सीटों पर पहले ही काबिज है अब वह चार सौ पार की ओर बढ़ रहा है।

## सख्त फैसलों ने लिखी सफलता की कहानी

दिनेश पाठक

टीवी9 नेटवर्क की व्हाट्सएप चैट इंडिया थिंक्स टुडे ग्लोबल समिट में पीएम मोदी ने कहा, हम राजनीति नहीं, राष्ट्रनीति पर काम करने वाली सरकार हैं। यानी जो कुछ करते हैं, वह देश की भलाई के लिए होती है। इससे देश आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ा है तो पूरी दुनिया में इसकी विराट तस्वीर सामने आई है। यह दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। यह सब संभव हुआ है सरकार की नीतियों के कारण।

उन्होंने कहा, पूरी दुनिया भारत की तरफ से हैरान है। दुनियाभर में भारत की विश्वसनीयता बढ़ी है। आइए जान लेते हैं मोदी सरकार की वो पांच नीतियां, जिनके कारण भारत की ख्याति दुनियाभर में बढ़ी है।

1- विदेश नीति पर अडिग मोदी सरकार दरअसल, साल 2014 में भाजपा पूर्ण बहुमत के साथ सत्ता में आई और नरेन्द्र मोदी प्रधानमंत्री बने तो इसके अगले ही साल यानी 2015 में बेंगलुरु में पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी में भारत की विदेश नीति से संबंधित एक अहम प्रस्ताव पास किया गया था। इसमें पांच सूत्र सम्मान, संवाद, समृद्धि, सुरक्षा और संस्कृति-सभ्यता को शामिल किया गया था। इन्हीं सूत्रों के आधार पर मोदी सरकार ने विदेश नीति को आगे बढ़ाया। आज जब अमेरिका जैसे दुनिया के दादा बनने वाले देश विकासशील देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने से बाज नहीं आते, ऐसे में भारत ने साफ किया कि अपने आंतरिक और विदेश मामलों में अब उसे किसी का दखल मंजूर नहीं है। अपनी विदेश नीति और कूटनीति पर आगे बढ़ते हुए भारत ने कई मौकों पर विदेशों में फंसे अपने देश के लोगों को बचाया और स्वदेश वापस लाई तो कतर में फ्रांसी के फंदे तक पहुंच चुके आठ पूर्व नौसैनिकों को बचा लाई। भारत अब भी नेबरहुड फर्स्ट यानी पड़ोसी पहले की नीति पर चलते हुए अपने पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंध स्थापित कर रही है। पाकिस्तान और चीन जैसे देशों को छोड़ दें तो नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और श्रीलंका जैसे देशों में निवेश और मदद के जरिए भारत अच्छे संबंध बना रहा है। इसके लिए भारत इन देशों की उस चिंता का भी ख्याल रखता है, जिससे यह न लगे कि भारत उन पर दबाव बना रहा है। भारत बड़े भाई की भूमिका के बजाय इन देशों के साथ सहयोगी की भूमिका में दिखाई दे रहा है।

विदेशों से जुड़े अपने फैसले भारत अब अलग तरह से ले रहा है। अफगानिस्तान में तालिबान आया तो उसे मान्यता नहीं दी पर मानवीय आधार पर वहां के लोगों की मदद की। रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान भारत ने एक और बात स्पष्ट की कि भारत अब साझेदारी की नीति पर अमल करेगा। इसके लिए वह किसी से गठबंधन नहीं करेगा। अमेरिका और यूरोप के साथ बढ़ रही साझेदारी का भारत पर दबाव था फिर भी उसने रूस से दूरी नहीं बनाई और उससे सस्ता कच्चा तेल आयात किया।

2- देश की भलाई के लिए सख्त फैसले

लेने से गुरेज नहीं

मोदी सरकार अब सख्त फैसले लेने से गुरेज नहीं करती है। राष्ट्र पहले नीति पर चलते हुए इसी दिशा में सरकार का बड़ा कदम था तीन तलाक को आपराधिक कृत्य घोषित करना। पूर्ण बहुमत की सरकार ने संसद में तीन तलाक बिल पास करवाया, जिससे मुस्लिम महिलाओं को बड़ी राहत मिली। इसी कड़ी में मोदी ने एक और बड़ा कदम उठाया और वह था जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 को समाप्त करना।

इस अनुच्छेद के जरिए जम्मू-कश्मीर को विशेष अधिकार मिले हुए थे और देश की संसद भी रक्षा, विदेश और संचार मामलों को छोड़कर इस राज्य के लिए कोई कानून नहीं बना सकती थी। सरकार ने अपनी यथास्थिति को बनाए रखने की नीति में बदलाव करते हुए जम्मू-कश्मीर का राज्य का दर्जा ही खत्म कर दिया और उसे केंद्र शासित प्रदेश बना दिया। इसी के एक हिस्से यानी लद्दाख को भी एक केंद्र शासित प्रदेश बनाया गया।

3- आर्थिक नीति में बदलाव कर लिए कड़े फैसले

भारत की अर्थव्यवस्था आज दुनिया की पांचवीं अर्थव्यवस्था बन चुकी है तो इसके पीछे केंद्र सरकार की आर्थिक नीति में बदलाव है। मोदी सरकार ने काले धन पर लगाम कसने के लिए 2016 में नोटबंदी की घोषणा की थी। इसके जरिए तब चलन में रहे 500 और 1000 रुपए के नोटों को अवैध घोषित कर दिया गया। इसी साल रेल बजट को आम बजट में समाहित कर दिया गया। एक देश एक टैक्स की नीति पर चलते हुए अगले ही साल यानी 2017 में मोदी सरकार ने जीएसटी लागू कर दिया, जिससे देश के हर हिस्से में हर आदमी को एक जैसा टैक्स देना पड़े।

सरकार ने गरीबी हटाने के लिए जनधन योजना शुरू की। किसानों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए किसान सम्मान निधि शुरू की गई, जिसमें किसानों को साल भर में छह हजार रुपये सीधे खाते में दिए जाते हैं। हर घर शौचालय, स्वच्छ भारत अभियान और आयुष्मान भारत आदि ऐसी योजनाएं हैं, जिनके जरिए भारत ने अपने लोगों के जीवन स्तर में सुधार की पहल की है।

पीएम गरीब कल्याण योजना, हर घर जल योजना, पीएम आवास योजना, डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी और नमामि गंगे जैसी योजनाओं से यह साफ होता है कि भारत अब अपने लोगों की तरफ से हर दिशा में आगे बढ़ रहा है। पूर्वोत्तर के राज्यों में ढांचागत संसाधन बढ़ाने की दिशा में भी सरकार तेजी से आगे बढ़ रही है। इसी का एक उदाहरण है सिक्किम में रेलवे लाइन बिछाने की शुरुआत करना।

4- अपनी रक्षा तो करेंगे ही, घर में घुसकर मारेंगे  
भारत अब केवल अपनी रक्षा की नीति पर ही नहीं चल रहा, साथ ही खुद को नुकसान पहुंचाने वालों को सबक भी सिखा रहा है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण है पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में

सर्जिकल स्ट्राइक करना। उरी में सेना के शिविर पर आतंकवादी हमले में 18 जवान शहीद हुए तो पूरा देश गुस्से में था। इस पर भारत ने अपने जवानों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए तो उपाय किए ही, सितंबर 2016 में पीओके में सर्जिकल स्ट्राइक कर आतंकवादियों के उन शिविरों को नष्ट कर दिया, जहां से भारत में आतंकवादी भेजे जाते थे। इससे पूरी दुनिया को यह संदेश गया कि सहयोग और समर्थन के साथ ही भारत अब कड़ाई और दंड की नीति पर भी अमल करना सीख गया है।

5- आत्मनिर्भर भारत की नीति एक वक्त था, जब अपनी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने के लिए भारत को विदेशों की ओर ताकना पड़ता था। खाने के लिए गेहूं से लेकर दवाओं और रक्षा के उपकरणों तक के लिए भारत दूसरे देशों पर निर्भर था। हालांकि, समय के साथ-साथ भारत आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा था। इसी बीच, साल 2020 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अगुवाई वाली सरकार ने बाकायदा आत्मनिर्भर भारत अभियान शुरू कर दिया। यह अभियान ऐसे दौर में शुरू किया गया था, जब पूरी दुनिया कोरोना जैसी महामारी की चपेट में थी। तब भारत ने अपनी जीडीपी का करीब 10 फीसदी हिस्सा यानी लगभग 20 लाख करोड़ रुपये का पैकेज केवल कोविड-19 से लड़ने के लिए दे दिया था।

इसी का परिणाम रहा कि संकटकाल में भारत ने अपने लिए तो संसाधन तैयार किए ही, दुनिया के कई देशों को पीपीई किट से लेकर चिकित्सा के तमाम उपकरण और दवाइयां भेजकर मदद की। अमेरिका तक ने भारत से पैरासिटामॉल जैसी दवा ली। फिर भारतीय वैज्ञानिकों ने इतिहास रचते हुए स्वदेशी कोविड वैक्सीन भी बना ली।

इसके बाद आत्मनिर्भर भारत अभियान में अर्थव्यवस्था, ढांचागत संसाधन, सिस्टम और मांग जैसे कई और पहलुओं को जोड़ा गया। देश में सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता की पहल हुई। आसान और स्पष्ट कानून बनाए गए। कौशल विकास पर ध्यान देकर कुशल मानव संसाधन तैयार किए गए। आर्थिक प्रणाली को मजबूती दी गई। इसका नतीजा है कि आज भारत रक्षा जैसे क्षेत्र में तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है।

डिफेंस कॉरिडोर इसी का एक उदाहरण है। ब्रह्मोस जैसी मिसाइल अब भारत खुद बनाने जा रहा है तो दूसरों को अपनी मिसाइल प्रणाली निर्यात भी कर रहा है। दुनिया की तमाम बड़ी कंपनियां अब भारत में अपने उत्पाद तैयार करना चाहती हैं और एप्पल जैसी कंपनी यहां उत्पादन कर रही है। वंदे भारत जैसी सेमी हाईस्पीड ट्रेन चलाकर रेलवे यातायात को भी भारत अब तेजी से मजबूत बना रहा है तो सीमांत कश्मीर तक ट्रेन पहुंचाने के लिए सबसे ऊंचा रेलवे ब्रिज बना चुका है। मेक इन इंडिया के अभियान ने देश के औद्योगिक विकास में बड़ी भूमिका निभाई है यही देश की जरूरत भी है।

# जिसके पास जमीन नहीं उसे उद्यमी बनाएगी नई सरकार

(पेज एक का शेष भाग पढ़िए)

आता है कि यहां पर कर सकते हैं और या नहीं कर सकते हैं. ये अपने आप में एक बड़ी ही यूनीक चीज है. इंफ्रास्ट्रक्चर प्लानिंग में हमें बहुत बड़ी सुविधा रहती है. इसलिए हमें लगता है कि हम बहुत गति से आगे बढ़ें हैं.

अब UPI की बात करें, फिनटेक की दुनिया में आज ये बहुत बड़ा काम हुआ है. इंफ्रास्ट्रक्चर की मजबूती के लिए करीब 11-12 लाख करोड़ रुपये खर्च करते हैं, जो पहले कभी डेढ़ या दो लाख करोड़ रुपये रहता था. रेलवे में भी, आधुनिक रेलवे बनाने की दिशा में काम हुआ, इतना ही नहीं, हमने अनमैड क्रॉसिंग (मानवरहित क्रॉसिंग) की समस्या को पूरी तरह से जीरो कर दिया. रेलवे स्टेशन की सफाई देखिए, हर चीज में बारीकी से ध्यान दिया गया है. हमने इलेक्ट्रिफिकेशन पर बल दिया, करीब करीब 100 परसेंट इलेक्ट्रिफिकेशन पर हम चले गए हैं.

पहले हमारे यहां गुड्स ट्रेन थी या पैसेंजर ट्रेन थी, मैंने उसमें एक यात्री ट्रेन की परंपरा शुरू की. जैसे रामायण सर्किट की ट्रेन चलती है, एक बार पैसेंजर अंदर गया, तो पूरे 18-20 दिन की यात्रा के दौरान उसे सारी सुविधाएं मिलती हैं. सीनियर सिटिजन के लिए बहुत बड़ा काम हुआ है. जैन तीर्थ क्षेत्रों के लिए यात्रा चल रही है, द्वादश ज्योतिर्लिंग की चल रही है, बुद्ध सर्किट की चल रही है. यानी इंफ्रास्ट्रक्चर को बनाकर छोड़ देने से बात नहीं बनती है. हमने उसका ऑप्टिमम यूटिलाइजेशन का भी प्लान साथ साथ करना चाहिए और उस दिशा में हम काम कर रहे हैं.

संजय पुगलिया: आपने जो अभी जिक्र किया उससे मुझे जो समझ आया, जो हेडलाइन है वो ये कि ब्यूरोक्रेसी में आपने बहुत परिवर्तन पहले ही किए हैं, आपने सरदार पटेल का भी हवाला दिया, मुझे लगता है कि इन सारे कामों को अंजाम देने में गवर्नेंस स्ट्रक्चर में ब्यूरोक्रेटिक बदलाव बड़े पैमाने पर आप करने जा रहे हैं.

नरेंद्र मोदी: पहली बात ये है कि एक तो ट्रेनिंग बहुत बड़ी चीज है, रिस्कमेंट प्रोसेस बहुत बड़ी चीज है, और मैंने इस पर बड़ा बल दिया है. ट्रेनिंग संस्थाओं को हमने पूरी तरह से बदल दिया है. टेक्नोलॉजी का भरपूर उपयोग हमारे यहां हर लेवल पर है, उस दिशा में हम बल दे रहे हैं, अब रिस्कमेंट में भी मैंने लोअर लेवल के इंटरव्यू सब समाप्त कर दिए हैं, वो भ्रष्टाचार का अड्डा बन गए थे. गरीब आदमी को लूटा जाता था. अब मेरिट के आधार पर कंप्यूटर तय करता है उनको नौकरी दे देते हैं. इससे समय भी बच जाता है, हो सकता है उसमें 2-3 परसेंट ऐसे लोग भी आ जाएंगे जो शायद न होते तो अच्छा होता, लेकिन बेईमानी से तो 15 परसेंट लोग आ जाते हैं.

दूसरी बात है, आजकल मेरी कैबिनेट में एक महत्वपूर्ण परंपरा चली है. पार्लियामेंट का कोई बिल आता है न, तो ग्लोबल स्टैंडर्ड की एक नोट आती है साथ में. दुनिया में उस फील्ड



में कौन सा देश सबसे अच्छा कर रहा है. उसके कानून नियम क्या हैं. हमें वो अचीव करना है तो वो हमें कैसे करना चाहिए, यानी अब मेरे हर कैबिनेट नोट को ग्लोबल स्टैंडर्ड से मैच करके लाना होता है. और इस कारण मेरी ब्यूरोक्रेसी की आदत हो गई है, कि सिर्फ बातें करने से नहीं होगा कि दुनिया में हम सबसे बढ़िया हैं. दुनिया में बढ़िया क्या है बताओ और उससे हम कितना दूर हैं. वहां जाने का हमारा रास्ता क्या है. अब जैसे हमारे यहां 1300 आयलैंड (द्वीप) हैं. आप हैरान हो जाएंगे, जब मैंने आकर पूछा, तो हमारे पास कोई रिपोर्ट ही नहीं था, कोई सर्वे ही नहीं था. मैंने स्पेस टेक्नोलॉजी का उपयोग करके, भारत के पास जितने आयलैंड हैं उसका सर्वे किया. कुछ आयलैंड तो करीब करीब सिंगापुर की साइज के हैं. इसका मतलब भारत के लिए नए सिंगापुर बनाना मुश्किल काम नहीं है, अगर हम लग जाएं तो. हम दिशा में आगे बढ़ रहे हैं. यानी ब्यूरोक्रेसी में चेंज, डिजिजन में चेंज, बड़ी योजनाओं को अंजाम देना है तो उस दिशा में हम काम कर रहे हैं.

संजय पुगलिया: ये आपने बड़ा इंटरस्टिंग जिक्र किया, सिंगापुर का एक उदाहरण देकर, फिर ये अनुमान लगाना गलत नहीं होगा कि इस बार जब हम इंफ्रास्ट्रक्चर और डेवलपमेंट की बात कर रहे हैं, तो कुछ ऐसी चीजें हो जाएंगी बहुत जल्दी, जो शायद हमारी सामूहिक सोच अभी सोच भी नहीं पा रही है.

नरेंद्र मोदी: बहुत होगा जी, अब जैसे डिजिटल एम्बेसी की कल्पना है, हम काफी माला में इसको प्रमोट कर रहे हैं. आप जो डिजिटल क्रांति भारत में देख रहे हैं, शायद मैं समझता हूँ कि गरीब को इम्प्रावरमेंट का एक सबसे बड़ा साधन ये डिजिटल डिवाइस है. असमानता कम करने में डिजिटल डिवाइस बहुत बड़ी मदद करेगा. मैं समझता हूँ कि AI, दुनिया ने ये मानना शुरू किया है कि AI में भारत पूरी दुनिया को लीड करेगा. हमारे पास उस तरह का टैलेंट है यूथ है, जो बहुत कुछ कर सकता है. दूसरा भारत के पास विविधताएं बहुत हैं, हमारे डेटा की ताकत बहुत है.

मैं अभी कंटेंट क्रिएटर्स और गेमिंग वालों से मिला था, मैंने उनसे पूछा कि क्या कारण है जो ये इतना फैल रहा है. वो बोले कि डेटा बहुत सस्ता है. दुनिया में डेटा इतना महंगा है, वो बोले कि मैं दुनिया के गेमिंग कम्पटीशन में जाता हूँ, तो इतना महंगा पड़ता है, भारत में जब बाहर के लोग आते हैं तो उन्हें आश्चर्य होता है. आज ऑनलाइन सब चीजें एक्सेस हैं. कॉमन सर्विस सेंटर करीब पांच लाख से ज्यादा है. यानी हर गांव में और बड़े गांव में 2-3 कॉमन सर्विस सेंटर हैं. अगर किसी को रेलवे रिजर्वेशन कराना है तो वो अपने गांव में ही कॉमन सर्विस सेंटर से करा लेता है. ये सिटिजन सेंट्रिक व्यवस्थाएं हुई हैं, इसका बहुत बड़ा लाभ है.

गवर्नेंस में मेरा एक फिलॉसफी है, उसको मैं कहता हूँ P2G2 यानी प्रो पी-पुल-गुड गवर्नेंस. मुझे याद है मैं न्यूयॉर्क में प्रोफेसर पॉल रॉमर्स से मिला था. वो नोबेल प्राइस विनर हैं. उनके साथ काफी सारी बातें हुईं, तो वो मुझे सुझाव देते थे कि डॉक्यूमेंट रखने वाले सॉफ्टवेयर की जरूरत है, जब मैंने उनको कहा कि मेरे देश में डिजीलॉकर है, मैंने उनको मोबाइल में सारी चीजें बताईं तो वो इतना उत्साहित हो गए, दुनिया जो सोचती है, हम कई गुना इस डिजिटल की दुनिया में आगे बढ़ चुके हैं. आपने G20 में भी देखा होगा, भारत के डिजिटल डिवाइस की चर्चा थी.

संजय पुगलिया: ये बिल्कुल सही कहा आपने, डिजिटल में जो पब्लिक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर भारत ने बनाया है, वो दुनिया भर के देश आपसे कॉपी करके लेना चाह रहे हैं. और एक खुद का अनुभव बताऊं आजकल 10 में से 9 लोग जो छोटे रोजगार वाले हैं. उनको आप कैश देना चाहें तो 10 में से 9 लोग मना करते हैं कि कैश नहीं लेंगे, ये बड़ा परिवर्तन है.

नरेंद्र मोदी: देखिए, ये रेहड़ी-पटरी वाले लोग हैं न, उनको बैंक वाले पैसे नहीं देते थे. ये मेरे डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर का फायदा हुआ कि रेहड़ी-पटरी वालों को बैंक से लोन मिला. हर रेहड़ी-पटरी वाले के यहां आपको क्यू-आर कोड मिलेगा. उसको मालूम है कि मैं इसका उपयोग कैसे करूंगा. वो पढ़े

लिखे नहीं हैं तो उनको वॉयस से मैसेज आता है. उसको पता है कि मेरा पैसा मेरे अकाउंट में जमा हो गया. व्यवस्था पर विश्वास भी बढ़ा है उसका.

संजय पुगलिया: आपकी जो ग्रोथ और विकास के टारगेट हैं, उसमें एग्रीकल्चर से लोगों को शिफ्ट करना और मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ाना, PLI की सफलता बहुत सारे सेक्टरों में बहुत अच्छी रही. लेकिन यहां पर हमको लगता है कि बहुत ज्यादा काम करने की जरूरत है, ताकि लोग भारत में प्रोड्यूस करें, आईफोन एक उदाहरण है, उसको एक्स्ट्रापोलेट (विस्तार) करने की जरूरत है. इस पर क्या सोचते हैं

नरेंद्र मोदी: देखिए जिन लोगों ने बाबा साहब अंबेडकर का अध्ययन किया है न, बाबा साहब अंबेडकर एक बहुत बढ़िया बात बताते थे. हमारे देश के राजनेताओं ने उसकी अनदेखी की है. बाबा साहब कहते थे इस देश में इंडस्ट्रियल रिवांल्यूशन बहुत जरूरी है. क्योंकि देश का दलित, आदिवासी जमीन का मालिक है ही नहीं. वो एग्रीकल्चर में कुछ नहीं कर सकता है. उसके लिए इंडस्ट्रियल रिवांल्यूशन का हिस्सा बनना बहुत जरूरी है. इसलिए मैं मानता हूँ कि भारत में हम एग्रीकल्चर पर जितना बोझ हम कम करेंगे, आज उस पर बोझ बहुत है. बोझ कम करने के लिए कानून नहीं करता है, डायवर्सिफिकेशन काम करता है. डायवर्सिफिकेशन तब होता है जब आपके डी-सेंट्रलाइज्ड तरीके से इंडस्ट्रियल नेटवर्क हो. अगर दो बेटे हैं तो एक बेटा इंडस्ट्री के काम में चला जाएगा और एक बेटा खेती संभालेगा, तो खेती पर जो बोझ है वो कम हो जाएगा. एग्रीकल्चर को वायबल, मजबूत बनाने के लिए भी इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट जरूरी है. हम एग्रीकल्चर का वैल्यू एडिशन करने वाली इंडस्ट्री जितनी ज्यादा बढ़ाते हैं, तो सीधा-सीधा फायदा है. नहीं तो हम डायवर्सिफिकेशन की तरफ ले जाएं तो उसका फायदा है.

मेरा गुजरात का अनुभव रहा है. गुजरात तो एक ऐसा राज्य है, जिसके पास खुद के अपने कोई मिनरल्स नहीं हैं. ज्यादा से ज्यादा नमक के सिवा कुछ है नहीं गुजरात के पास. ऐसे समय में

गुजरात एक ट्रेडर स्टेट बना था. एक तो 10 साल में 7 साल अकाल, एग्रीकल्चर में भी हम पिछड़े थे. एक जगह माल लेते थे, दूसरी जगह देकर गुजारा करते थे. उसमें से रिवांल्यूशन आया, एग्रीकल्चर में रिवांल्यूशन आया, वो मेरा अनुभव मुझे यहां बहुत काम आ रहा है. हमारी इंडस्ट्री में हमें क्लस्टर डेवलप करने चाहिए. जैसे मेरी एक छोटी सी स्कीम है, वन डिस्ट्रिक्ट-वन प्रोडक्ट, ये डिस्ट्रिक्ट की पहचान बन रही है, इसमें वैल्यू एडिशन हो रहा है, टेक्नोलॉजी आ रही है, क्वालिटी आ रही है.

आज देखिए भारत की ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री में बहुत बड़ी संभावनाएं हैं, इलेक्ट्रिक व्हीकल्स के लिए बहुत संभावनाएं हैं. हमने स्पेस को ओपन-अप कर दिया. हमने देखा कि स्पेस में इतने स्टार्टअप आए हैं. ये सारे स्टार्टअप टेक्नोलॉजी को लीड कर रहे हैं. हम मोबाइल फोन इंपोर्टर थे, आज हम मोबाइल फोन के दुनिया के दूसरे सबसे बड़े मैन्युफैक्चरर हो गए हैं. आज हम दुनिया के अंदर आईफोन को एक्सपोर्ट कर रहे हैं. दुनिया में 7 में से 1 आईफोन हमारे यहां बनता है. गुजरात में जो मेरा डायमंड का अनुभव रहा, आज दुनिया में 10 में से 8 डायमंड वो होते हैं, जिस पर किसी न किसी हिंदुस्तानी का हाथ लगा होता है. अब उसका अगला चरण मैं देख रहा हूँ, वो है ग्रीन डायमंड का, लैब ग्रीन डायमंड (लैब में बने डायमंड) का. दुनिया में बहुत बड़ा मार्केट हो रहा है. मैं जब गुजरात में था तो थोड़ी शुरुआत की थी, अब काफी बढ़ रहा है. आने वाले दिनों में लैब ग्रीन डायमंड में भी हम काफी प्रगति करेंगे.

सेमीकंडक्टर, हम कुछ ही दिनों में चिप लेकर आएंगे, मैं मानता हूँ कि ट्रांसपोर्टेशन के साथ जुड़ी हुई चिप्स का जो कारोबार है. उसमें हो सकता है हम हब बन जाएं. हम डिफेंस मैन्युफैक्चरिंग में बहुत तेजी से काम कर रहे हैं. करीब 1 लाख करोड़ रुपये का डिफेंस प्रोडक्शन देश में शुरू हुआ है. करीब 21 हजार करोड़ रुपये का डिफेंस एक्सपोर्ट हुआ है. हम पहले हर छोटी चीज भारत से लाते थे. हमारे आंतर्राष्ट्रीय को भी लगा है कि हम बना सकते हैं और दुनिया हमसे खरीद रही है. मैं समझता हूँ कि भारत पूरी तरह इंडस्ट्रियल रिवांल्यूशन में टेक ऑफ स्टेज पर है.

संजय पुगलिया: आपने बिल्कुल ठीक कहा कि टेक ऑफ स्टेज पर है और आपने जो इनोवेशंस किए हैं, उसके कारण अब ग्लोबल इन्वेस्टर्स को भारत में इन्वेस्ट करने के लिए जिज्ञासा और दिलचस्पी बहुत है. लेकिन वो सोचते हैं कि कुछ बोल्ड फैसले आपकी तरफ से, नई सरकार की तरफ से बड़े जरूरी होंगे, ताकि बड़ा इन्वेस्टमेंट आए, और इस स्केल को जिसकी कल्पना आ भी करते हैं, उसको बहुत बढ़ा सकें.

नरेंद्र मोदी: पहली बात कि बाहर से जब लोग आते हैं तो वो सिर्फ भारत सरकार देखकर आए, इतने से बात बनती नहीं. स्टेट गवर्नमेंट और लोकल

(शेष भाग पेज चार पर पढ़िए)

# विकास के काम बगैर मानव बल के नहीं होते, यहीं बढ़े रोजगार

(पेज तीन का शेष भाग पढ़िए)

सेल्फ गवर्नमेंट, तीनों की नीतियों में एक सूत्रता चाहिए. अगर मान लीजिए अगर भारत सरकार कोई पॉलिसी लेकर आती है, और दुनिया की कोई इंडस्ट्री आती है. भारत के पास तो एक इंच जमीन नहीं है, वो क्या करेगी. वो तो स्टेट को कहेंगे कि देखो वो आया है. उस स्टेट की पॉलिसी मैच होनी चाहिए. फिर जिस गांव या शहर में जा रहा है, वहां के जो कानून है, वो उसके अनुकूल होने चाहिए. मैंने ईज ऑफ डूइंग बिजनेस का मूवमेंट चलाया था, उसके पीछे मेरा इरादा था कि केंद्र सरकार, राज्य सरकार और स्थानीय स्वराज समुदाय, तीनों के निर्णय ऐसे हों जो इन चीजों के लिए अनुकूल हों. अभी भी कुछ रुकावट है, लेकिन अब एक कम्पटीशन में देख रहा हूं. और मैं हमेशा Competitive, Cooperative federalism को मानता हूं. राज्यों के बीच में एक तंदुरुस्त स्पर्धा हो, अब वो स्पर्धा राज्यों के बीच में धीरे-धीरे आ रही है. वो अपने नियमों को ठीक-ठाक कर रहे हैं. ब्यूरोक्रेसी में बदलाव कर रहे हैं. अगर मुझे राज्यों का सहयोग मिल गया. तब तो मैं मानता हूं कि दुनिया में कोई व्यक्ति भारत के सिवा कहीं नहीं जाएगा.

संजय पुगलिया: ये एक बहुत जरूरी काम है, और इससे जुड़ा हुआ दूसरा है, जिसके बारे में आपकी छवि पहले से ही यही है, कि फिस्कल डिस्पलिन के मामले में आप बहुत सख्त हैं. लेकिन आजकल गारंटियों का मुकाबला चल रहा है. और आप डबन डाउन करते हैं कि ईज ऑफ लिविंग के लिए लोगों की जिंदगियों को खुशहाल बनाना है. तो कुछ इन्वेस्टर्स को ये आशंका होती है कि फिस्कल डिस्पलिन का क्या होगा.

नरेंद्र मोदी: मेरे केस में किसी को आशंका नहीं है, जिन लोगों ने गुजरात के कार्यकाल को देखा है. मैं फाइनेंशियल डिस्पलिन का बहुत आग्रही रहा हूं, नहीं तो कोई देश चल नहीं सकता है. फिस्कल डिस्पलिन उसका एक क्राइ-टेरिया होता है. अभी आपने देखा होगा, चुनाव के पहले मेरा बजट आया, सबके पुराने आप मीडिया के आर्टिकल देखें, ये तो चुनाव के साल का बजट है, मोदी रेवडियां बांटेगा, चुनाव जीतेगा. जब बजट आ गया, तो लोगों को आश्चर्य हुआ कि ये तो चुनावी बजट है ही नहीं.

संजय पुगलिया: आपके पास फिस्कल स्पेस था खर्च करने के लिए और आपने नहीं किया

नरेंद्र मोदी: मैंने डेवलपमेंट के लिए खर्च करना तय किया, क्योंकि मुझे मालूम है मुझे गरीबी से इस देश को मुक्त करना है. तो मुझे गरीब को एम्पावर करना होगा. गरीब को अवसर देना होगा. गरीब, गरीबी में रहना नहीं चाहता है, वो बाहर निकलना चाहता है. उसको हाथ पकड़ने वाला कोई चाहिए. देखिए- UPA सरकार जब थी, फिस्कल डिस्पलिन उन्होंने स्वीकार नहीं किया, इसका साइड इफेक्ट इतना हुआ. मैं मानता हूं फिस्कल डिस्पलिन को आपको रिलिजियसली फॉलो करना



चाहिए.

दुनिया में क्या हाल हुआ, कुछ लोगों को लगा कि कोरोना में नोट छापों और बांटों, दुनिया में लोग अब भी महंगाई से बाहर नहीं आ रहे हैं. फिस्कल डिस्पलिन को हमने कंट्रोल किया. दूसरा मैंने देखा है कि जैसे-जैसे टैक्सेशन आप कम करोगे, आपका रेवेन्यू बढ़ता जाएगा. इनकम टैक्स भरने वालों की संख्या डबल हो रही है. GST रजिस्ट्रेशन की संख्या बढ़ रही है. लोगों को भरोसा है कि सरकार की तरफ से कोई दिक्कत नहीं है.

दूसरा विषय वेलफेयर का है, मैं वेलफेयर को एक प्रकार से भारत के सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर का एक बहुत बड़ा महत्व का हिस्सा मानता हूं, अगर हम वेलफेयर स्कीम को टारगेटेड करें और क्वालिटी ऑफ लाइफ से जोड़कर करें तो वो एसेट बन जाती है. आपने देखा होगा कि मेरे हर एक काम में वेलफेयर स्कीम उनके लिए क्वालिटी ऑफ लाइफ की गारंटी बनती है. एक बार अच्छी जिंदगी की आदत लग जाए तो वो अच्छी जिंदगी जीने का प्रयास करता है. मेरी वेलफेयर स्कीम का सार ये है. जैसे- मैं अनाज मुफ्त नहीं देता हूं, मैं पोषक आहार पर बल देता हूं. मेरे देश को स्वस्थ बचपन चाहिए, वो ही मेरे देश को एक स्वस्थ भविष्य देगा. ऐसी हर चीज पर मैं बहुत बल देकर काम करता हूं.

कैपेक्स में भी पहले करीब 2 लाख करोड़ रुपये था, हम करीब 11-12 लाख करोड़ रुपये कैपेक्स तक पहुंच गए, कितने लोगों को रोजगार के अवसर मिल गए. कितने लोग नए आ गए फील्ड में काम करने वाले.

संजय पुगलिया: आजकल नए युवा भी इन्वेस्टमेंट में बहुत आ रहे हैं. मेरी अपनी राय ये है कि बाजार ने इलेक्शन का नतीजा पहले ही समझकर के बहुत तेजी से ऊपर का रुख कर लिया था. अभी थोड़ी बाजार में नर्वसनेस है कि नतीजे कैसे आएंगे. तो उस पर आप कुछ टिप्पण करना चाहेंगे.

नरेंद्र मोदी: हमारी सरकार ने बहुत सारे इकोनॉमिक रिफॉर्म्स किए हैं, और प्रो-आंत्रप्रेन्योरशिप पॉलिसीज हमारी इकोनॉमी को बहुत बढ़ा बल देती है, जो स्वाभाविक है. हमने 25,000 से यात्रा शुरू की थी 75,000 पहुंचे हैं. जितने

ज्यादा सामान्य नागरिक इस फील्ड में आते हैं, इकोनॉमी को बहुत बढ़ा बल मिलता. मैं चाहता हूं कि हर नागरिक में जोखिल लेने की क्षमता बढ़नी चाहिए, ये बहुत जरूरी होता है. 4 जून, जिस दिन चुनाव का नतीजा आएगा. आप इस हफ्ते भर में देखना, भारत का शेयर मार्केट कहां जाता है, उनके प्रोग्रामिंग वाले सारे थक जाएंगे.

अब आप देखें PSU's के शेयर आज कहां पहुंचे हैं. PSU's का पहले मतलब ही होता था गिरना, अब स्टॉक मार्केट में इनकी वैल्यू कई गुना बढ़ रही है. HAL को ही देख लीजिए, जिसे लेकर इन लोगों ने जुलूस निकाला, मजदूरों को भड़काने की कोशिश कर रहे थे. आज HAL ने चौथी तिमाही में रिकॉर्ड प्रॉफिट दर्ज किया है. HAL ने 4,000 करोड़ रुपये का प्रॉफिट कमाया है, ऐसा तो इसके इतिहास में भी कभी नहीं हुआ. मैं मानता हूं कि ये एक बहुत बड़ी प्रगति है.

संजय पुगलिया: इकोनॉमी गवर्नर्स से अब थोड़ा पॉलिटिक्स की तरफ चलें और रोजगार का मुद्दा उठाएं तो विपक्ष का एक आरोप है कि रोजगार क्रिएट नहीं हुए हैं, तो रोजगार क्रिएट नहीं हुए हैं या उसका स्वरूप बदल गया है.

नरेंद्र मोदी: पहली बात है कि इतना सारा काम मानव बल के बिना संभव नहीं है, सिर्फ रुपये हैं, तो रोड नहीं बन जाता है. रुपये हैं, इसलिए रेलवे का इलेक्ट्रिफिकेशन नहीं हो जाता है. मैनपावर लगता है. मतलब रोजगार के अवसर बनते हैं. विपक्ष की बेरोजगारी की बातें हैं, उसमें कोई मुद्दा कोई सच्चाई नजर नहीं आती है. मैं मानता हूं परिवारवादी पार्टियों को इस देश के युवा में क्या बदलाव आए हैं, उनको कुछ समझ नहीं आता है. जैसे कि स्टार्टअप- 2014 के पहले कुछ सैकड़ों स्टार्टअप थे, आज सवाल लाख स्टार्टअप हैं. एक स्टार्टअप यानी 5-5 साल ब्राइट नौजवानों को काम देता है. आज 100 यूनिर्कॉर्न हैं, यानी 8 लाख करोड़ रुपये का कारोबार. ये वो लोग हैं, जो 20, 22, 25 साल के हैं, बेटे-बेटियां हैं हमारे. आप देख लेना कि गेमिंग की फील्ड में भारत पूरी दुनिया में लीड करेगा. एंटरटेनमेंट इकोनॉमी से अब हम क्रिएटिव इकोनॉमी की तरफ हम मुड़ गए हैं. मैं पक्का मानता हूं कि हमारे

क्रिएटर्स मार्केट को शेयर कर लेंगे.

एविएशन सेक्टर को ले लीजिए, हमारे देश में करीब 70 एयरपोर्ट थे. आज करीब 150 एयरपोर्ट हो गए हैं. हमारे देश कुल हवाई जहाज, प्राइवेट और सरकार मिलाकर करीब 600-700 हैं. 1,000 नए हवाई जहाज का ऑर्डर है. कितने प्रकार के लोगों को रोजगार मिलेगा, कोई कल्पना कर सकता है क्या. इसलिए ये जो नैरेटिव है पॉलिटिकल फील्ड में जो लोग हैं, उन्होंने रिसर्च नहीं किया है, उनकी गाड़ी वहीं अटकी हुई है.

PLFS का जो डेटा है, उसका कहना है कि बेरोजगारी आधी हो गई है. 6-7 साल में 6 करोड़ नई जॉब्स जेनरेट हुई हैं. EPFO, ये भी रिकॉर्डेड होता है, कोई हवाबाजी तो है नहीं. 7 साल में 6 करोड़ से ज्यादा नए अवसर रजिस्टर्ड हुए हैं. सरकारी नौकरी को लेकर मैंने एक बहुत बड़ा अभियान चलाया था, तो ये लोग कहते थे मुझे कि नौकरी देने में इतना हो-हल्ला करते हैं. अभी ये जो SKOCH ग्रुप की जो रिपोर्ट आई है, वो बड़ी दिलचस्प है. इसमें कहा गया है कि पिछले 10 साल में हर वर्ष 5 करोड़ पर्सन ईयर रोजगार जेनरेट हुआ है. उन्होंने पैरामीटर के रूप में 22 चीजों को लिया है. ये सारी चीजें धरती पर दिखती भी हैं, ऐसा नहीं है कि ये सिर्फ कागजों में दिखती है. मैं नॉन गवर्नमेंट जो अलग अलग व्यवस्थाएं हैं, उससे जो बातें आई हैं, मैं उसकी बात कर रहा हूं.

संजय पुगलिया: सर ये पहला चुनाव है जो बोरिंग चुनाव है, सबसे ऐतिहासिक चुनाव है, जिसमें जनादेश क्या आएगा सबको पहले से मालूम है, तो भी हम डिबेट चलाते हैं थोड़ी बहुत, किसको कितनी सीटें आएंगी, तो साउथ इंडिया और ईस्ट इंडिया को लेकर बड़ा भरोसा जाहिर किया है कि BJP को बड़ी सफलता मिलेगी, आप ओवर कॉन्फिडेंट तो नहीं हैं.

नरेंद्र मोदी: पहली बात है कि मैं कॉन्फिडेंस होता है तो भी कभी जताता नहीं हूं, ओवर कॉन्फिडेंस में जीता नहीं हूं. मैं जमीन पर नित्य जीवन का हिसाब किताब करके कदम रखने वाला इंसान रहा हूं. सोचता बढ़ा हूं, सोचता दूर का हूं, लेकिन जमीन से जुड़ा रहता हूं. देखिए दक्षिण भारत कहो, या पूर्वी भारत कहो, उत्तरी भारत

कहो, या पश्चिमी भारत कहो या मध्य भारत कहो. देश के जनमन में स्थिर है कि ये काम करने वाली सरकार है, देश को आगे ले जाने वाली सरकार है. हमारा भला करने वाली सरकार है. हमारी समस्या की उसको समझ है. जब नागरिक को ये पता होता है कि मेरा दुख उसको पता है. डॉक्टर अच्छा कौन लगता है, आपको अच्छा डॉक्टर वो लगता है जिसके पास जाते ही, जो आपको देखते ही कहे कि आपको पेट में दर्द हुआ है, लेकिन आपकी आंख में क्या हुआ है. वो जिसको पता रहता है ना, ऐसा डॉक्टर अच्छा लगता है. आज देश को लग रहा है कि आज एक ऐसी सरकार है, जिसको हमारे दुखों की चिंता है. हमारे सपनों का उसका अंदाज है, और जो हमारे सामर्थ्य को बढ़ाने के लिए हमेशा प्रयास करता है. इस कारण मैं मानता हूं कि सामान्य मानवीय के मन में भारतीय जनता पार्टी है.

एक जमाना था, हमारे यहां कहते थे पशुपति से तिरुपति तक, रेड कॉरिडोर था, पूरा नक्सल बेल्ट बना दिया गया था. सिकुड़ता-सिकुड़ता अब ये हट गया है, लोग शांति से जीने लगे हैं. उस मां को कितना आनंद होता है कि उसका बच्चा सही दिशा में जाएगा. वो जंगल में रही है, लेकिन उसको लगता है कि ये मेरे बच्चों का भविष्य देखता है, चिंता करता है. आज देखिए हिंदुस्तान के हर कोण में नॉर्थ ईस्ट देखिए, बंगाल देखिए, असम देखिए, ओडिशा देखिए, तेलुगु भाषी राज्य देखिए, कर्नाटक देख लीजिए, भारतीय जनता पार्टी बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है. अब जम्मू कश्मीर में देखिए, वहां के मतदाताओं ने 40 परसेंट वोट किया है, 40 साल के बाद इतनी वोटिंग हो, सरकार के प्रति भरोसा है. और इसलिए मैं कहता हूं कि इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को ऐतिहासिक रूप से एक बहुत बड़ा रिकॉर्ड सेट होने वाला है.

संजय पुगलिया: आपकी ऐसी मान्यता है ऐसे में जो विपक्ष के गठबंधन की परिस्थिति है, उसमें विरोधाभास भी सामने आते हैं. ममता बनर्जी ने कहा कि मैं अलायंस में नहीं रहूंगी, फिर कहा कि सरकार बनेगी तो मैं सरकार को बाहर से समर्थन दूंगी. अखिलेश किधर हैं, पता नहीं. ऐसे में स्थिर सरकार और अस्थिर सरकार, ये भी एक वोटर सोचता है कि मैं किस विषय पर निर्णायक तौर पर तय करूं कि वोट देना है. तो विपक्ष की ये जो परिस्थिति है जो लोकतंत्र को बचाने की गारंटी देता है, उसकी हालत पर आपकी राय.

नरेंद्र मोदी: इतना बड़ा देश, जिसको आप वोट देने जा रहे हो, आप उसको जानते हो क्या, उसका नाम पता है क्या, उसके अनुभव का, क्षमता का पता है क्या. तो ये देश की जनता देखती है. कोई पार्टी अपने नाम बताएं या न बताएं, वो तौलती है, और हमारा पलड़ा बहुत भारी है और उसमें हमें कुछ कहने की जरूरत नहीं है. दूसरा विषय, INDI अलायंस, की फोटो खिंचाने के अलावा कोई गतिविधि दिखती है क्या.

(शेष भाग पेज पांच पर पढ़िए)

# लोकतंत्र की दुहाई देते फिर रहे सीताराम केसरी को बाहर फेंकने वाले

(पेज चार का शेष भाग पढ़िए)

फोटो ऑप में पहली INDI अलायंस में जितने चेहरे थे, जाते-जाते, संख्या भी कम हो गई क्वालिटी भी. यानी थर्ड कैटेगरी का व्यक्ति जाता है, फोटो निकलवाकर आ जाता है. उनका कोई कॉमन एजेंडा है क्या, कैम्पेन की कोई स्ट्रैटजी है क्या, कुछ नहीं है. हर कोई अपनी टपली बजा रहा है, ऐसे में देश को विश्वास नहीं हो सकता है.

अब, कांग्रेस के सबसे विश्वस्त साथी कौन हैं, तो लेप्ट है. जिनके मन में ये कमिटमेंट है कि भाजपा वाले जाने चाहिए. उससे बड़ा कमिटमेंट तो कोई हो नहीं सकता. इन्होंने जाकर केरल में उसी को पराजित करने के लिए उसके सामने खुद खड़े हो गए, और जो भाषा को प्रयोग हुआ है केरल के चुनाव में, पूरे देश में ऐसी भद्दी भाषा उपयोग में नहीं आई है. मुख्यमंत्री तक के लोगों ने जिस तरह से कांग्रेस के लिए बोला है, मैं अलायंस के लोगों के लिए ये बात कर रहा हूँ.

ये बात फिक्स हो गई है, INDI अलायंस के सारे नेता ज्यादातर जमानत पर हैं, और ये सारे केस उनके जमाने के हैं, हमारे जमाने के केस नहीं हैं. अगर सारे एक साथ बिठाओगे तो लगेगा कि ये उसका बेटा है, ये उसका बेटा है...या ये इसका बाप, ये उसका बाप है. यानी ऐसा लगता है कि वो अपने बच्चों को सेट करने के लिए INDI अलायंस में जान भरने की कोशिश कर रहे हैं. देश के बच्चों का भविष्य नजर ही नहीं आता है उसमें, जब ऐसा होता है तो मैं नहीं मानता हूँ कि वो देश के लोगों को विश्वास जीत सकते हैं. दूसरी तरफ 10 साल का हमारी सरकार का मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड है. चाहे आतंकवाद के खिलाफ हमारा काम हो, चाहे सुरक्षा के विषय में काम हो, चाहे विकास के मुद्दे पर काम हो, चाहे विदेश नीति हो, चाहे संकट के समय हमारी पहल हो. मैं समझता हूँ कि देश की जनता इन सारी बातों को देखती है और उसको तौलती है, और इसलिए देश के सामान्य मानवीय ने मन बना लिया है कि भारत को बहुत आगे ले जाना है तो भारतीय जनता पार्टी, NDA एक विश्वस्त संगठन है, विश्वस्त लीडरशिप है और जिसको हम जानते हैं, जिसका हम ट्रायल ले चुके हैं. जिसको हम नाप चुके हैं. और इसलिए ये सहज समर्थन लगता है.

संजय पुगलिया: चूंकि ऐसा बढ़िया पॉजिटिव माहौल बना हुआ है, मोमेंटम आपकी तरफ है, ऐसे में दो सवाल और हैं, जो विपक्ष वाले आपकी तरफ उठाते हैं, उसमें से पहले ये है कि, तृष्टिकरण की बात आप हमेशा करते रहे हैं, उनका कहना है कि कम्यूनल रंग तो आपने भी दिया है.

नरेंद्र मोदी: यही कह-कहकर उन्होंने अपनी राजनीति चलाई है, और कभी कभी हम भी सोचते थे, कि हां भई जरा संभलकर चलो, लेकिन हर चीज को जब मैं यहां से बैठकर देखता हूँ, तो इन्होंने संविधान का अपमान करने के सिवाय कुछ किया नहीं है. संविधान सर्व पथ संभाव की बात कर



रहा है. ये लोग घोर साम्प्रदायिक लोग हैं, इनकी हर चीज का आधार साम्प्रदायिक है, और सम्प्रदाय में भी वोट बैंक की राजनीति है. और सम्प्रदाय से भी बाहर कहां जाना है, तो वो जाति है. एक तरफ सम्प्रदाय का वोट बैंक और फिर एक जाति को उठाना. उन्होंने सिर्फ यही खेल किया है. अब मुझे लगता है कि कम्यूनल का लेबल लगे तो लगे, मुझे जिसको कम्यूनल कहना है कहे, इन लोगों के पापों को मैं एक्सपोज करके रहूंगा. और मैं घटनाओं के साथ बताता हूँ कि इन्होंने ये नियम ऐसे बनाया था.

मेरा मंत्र है सबका साथ, सबका विकास, गांव के अंदर 100 लोग हैं जिनको बेनेफिट मिलता है. फिर ये मत पूछा कि किस जाति का है, किस बिरादरी का है, किसका रिश्तेदार है, रिश्तेदार देता है कि नहीं. 100 घर मतलब सबको मिलना चाहिए. इसलिए मेरी योजना है सैचुरेशन है. हर स्कीम के लाभार्थियों को 100 परसेंट मिलना चाहिए, और जब मैं 100 परसेंट कहता हूँ न, वो सच्चा सामाजिक न्याय है, तब वो सच्चा सेकुलरिज्म है और तब किसी को शिकायत का मौका नहीं रहता है. लोगों को विश्वास रहता है कि चलो, उसको जून में मिल गया तो मुझे भी दिसंबर आते-आते मेरा नंबर भी लग जाएगा. मुझे किसी को भी एक रुपया देने की जरूरत नहीं है. मुझे मिलने ही वाला है.

इसके कारण गवर्नेंस पर भी भरोसा हो जाता है. इन लोगों का तरीका है कि सबके कुछ नहीं करना है. मैं जो 80 करोड़ लोगों को मुफ्त अनाज देता हूँ, मैं भी ये कह सकता था कि इसको दूंगा और उसको नहीं दूंगा, लेकिन मैं ये नहीं कहूंगा, क्योंकि मुझे सबका साथ सबका विकास...इसी मंत्र पर चलना है.

उन्होंने वोटबैंक के लिए SC, ST, OBC के आरक्षण पर डाका डाला हुआ है, उनकी नजर यहीं है, ये लोग वोट जिहाद को समर्थन कर रहे हैं. ये सारी चीजें, साम्प्रदायिक प्रवृत्तियां सेकुलरिज्म का नकाब पहनकर कर रहे हैं. मुझे उनका ढोंगी सेकुलरिज्म का नकाब देश के सामने उतारकर दिखाना है कि ये घोर साम्प्रदायिक लोग हैं और ये वो लोग हैं जो अपने सत्ता सुख के लिए देश को तोड़ सकते हैं, वो आपके हर सपने को तोड़ सकते हैं.

अब आप देखिए इनके मेनिफ-

स्टो में ही ये हिम्मत की है, वो कहते हैं कि ठेक यानी कॉन्ट्रैक्ट धर्म के आधार पर दिए जाएंगे. अरे भई, अगर कोई ब्रिज बनाना है, उसके लिए एक्सपर्टीज किसके पास है. एक्सपीरियंस किसके पास है. रिसोर्सेज किसके पास हैं, टेक्निकल मैनेपावर किसके पास है. उसको ब्रिज बनाने को दो. अगर आप ठेके ऐसे ही दे देंगे तो वो ब्रिज क्या बनाएगा, क्या होगा मेरे देश का.

संजय पुगलिया: विपक्ष एक और आशंका जाहिर करता है कि देखिए 400 सीट तो इसलिए मांग रहे हैं कि क्योंकि इनको संविधान बदलना है.

नरेंद्र मोदी: पहली बात है कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में पहले ही 2019-24 के दौरान 400 सीट है. हम जीतकर करीब 360 सीट आए थे और हमारा NDA+ 400 सीट रहा है. इसलिए 400 सीट और संविधान को जोड़ना उनकी मूर्खतापूर्ण बातचीत है. सवाल ये है कि ये लोग हाउस को चलने ही नहीं देना चाहते हैं. कांग्रेस ने संविधान का क्या किया. ये संविधान की बातें करते हैं. मैं पूछता हूँ कि कांग्रेस के संविधान का क्या हुआ. क्या ये परिवार कांग्रेस पार्टी के संविधान को स्वीकार करता है. आपको याद होगा टंडन जी को पार्टी का अध्यक्ष बनाया था, संविधान के तहत बने थे. नेहरू जी को टंडन जी मंजूर नहीं थे, नेहरू जी ने झामा किया, बोले- मैं कार्यसमिति में नहीं रहूंगा. आखिरकार कांग्रेस पार्टी को चुने हुए अध्यक्ष को हटाना पड़ा, सिर्फ इस परिवार को खुश करने के लिए.

सीताराम केसरी, कांग्रेस के अध्यक्ष थे. व्यवस्था के तहत बने हुए थे. उनको बाथरूम में बंद कर दिया गया, रातों रात उठाकर बाहर फेंक दिया और मैडम सोनिया जी कांग्रेस की अध्यक्षता बन गई. जो इस प्रकार से कांग्रेस पार्टी पर कब्जा करते हैं, मैं जानना चाहूंगा कि कांग्रेस के आज जितने ये पदाधिकारी हैं. वो कब कांग्रेस के मेंबर बने थे. देश को वो डिक्लेयर करें, देश के संविधान के हिसाब से.

संजय पुगलिया: आपने केसरी जी का जिक्र किया तो एक डिस्कलेमर देना मुनासिब होगा कि उस वक्त मैं वहां मौजूद था, जब उनको भगाया गया था.

नरेंद्र मोदी: अब बताइए, संविधान की बात बोलने का उनका हक है क्या.

दूसरा- इन्होंने संविधान के साथ क्या किया. मैं तो कहता हूँ कि जब पहला संविधान बना, उस संविधान की एक आत्मा भी है शरीर भी है. संविधान की आत्मा क्या थी, संविधान निर्माताओं ने बड़ी बुद्धिमानी की थी, लिखित में जो चीज रखी जाएगी, वो वर्तमान और भविष्य के लिए होगी, लेकिन हमारा एक भव्य भूतकाल है. हमारी भव्य विरासत है. उसका क्या करेंगे. फिर तो संविधान बहुत बड़ा होता चला जाएगा. तो उन्होंने बड़ी बुद्धिपूर्वक संविधान को चिलों से मढ़ा. सारे चित्र भारत की हजारों साल की विरासत हैं. रामायण हो, महाभारत हो, छत्रपति शिवाजी महाराज हों, सारी चीजें उसमें हैं.

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने पहला काम क्या किया, संविधान की इस पहली प्रति को डिब्बे में डाल दिया और बाद में जो संविधान छपा वो इन चिलों के बिना छपा और 15 अगस्त के बाद के हिंदुस्तान से शुरू किया, अपने परिवार का जय-जयकार करने के लिए.

शरीर पर इस तरह प्रहार करने के बाद, अगला प्रहार उन्होंने संविधान की आत्मा पर किया. पहला संशोधन पंडित नेहरू ने अभिव्यक्ति की आजादी पर कैंची चलाकर किया. फिर संविधान की भावना पर उन्होंने प्रहार किया. 356 का दुरुपयोग करके 100 बार देश की सरकारों को उन्होंने तोड़ा. फिर इमर-जेंसी लाए. यानी एक प्रकार से उन्होंने संविधान को उन्होंने डस्टबिन में डाल दिया. इस हद तक उन्होंने संविधान का अपमान किया.

फिर इनके बेटे आए, पहले नेहरू जी ने ये पाप किया, फिर इंदिरा जी ने किया फिर राजीव जी आए. राजीव जी तो मीडिया को कंट्रोल करने के लिए कानून ला रहे थे. शाहबानो का सुप्रीम कोर्ट का जजमेंट उखाड़कर फेंक दिया और संविधान को बदल दिया, क्योंकि वोटबैंक की राजनीति करनी थी. फिर उनके सुपुत्र आए, शहजादे जी (राहुल गांधी). वो तो कुछ हैं भी नहीं एक एमपी के सिवा. कैबिनेट के निर्णय का कागज उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस के अंदर फाड़कर फेंक दिया. ये संविधान की बातें करते हैं.

जो चारा चोरी में जेल में बैठे हुए हैं, जिन्हें बीमारी के कारण जेल से बाहर आने की इजाजत मिली है. वो संविधान-संविधान करते रहते हैं. जिन्होंने संविधान की सारी भावनाओं को तोड़ते

हुए, जब महिला आरक्षण बिल आया था, संसद के अंदर बिल की प्रति को उन्होंने छीन लिया और फाड़ दिया, और संसद का वो आखिरी दिन था. संविधान का घोर अपमान करने वाले लोग आज संविधान सिर पर रखकर नाच रहे हैं. ये झूठ बोल रहे हैं.

संजय पुगलिया: भारत ने आपके नेतृत्व में गजब का काम किया है और वो है, दुनिया एकदम बदल गई है, जो ये सोचते थे कि दुनिया हम चलाते हैं, वो डिफेंसिव में हैं. भारत इंडिपेंडेंट और एग्रेसिव पॉलिसी लेकर आया है, जाहिर है कि इसको लेकर आपकी बड़ी योजनाएँ हैं, लेकिन एक विषय है, वो है पड़ोसी देशों का, उस मामले में रिश्तों को मैनेज करने में चुनौतियां हैं हमारे सामने.

नरेंद्र मोदी: दुनिया में ऐसा कोई काम नहीं होता, जिसमें चुनौतियां नहीं होती. हमारी विदेश नीति का आधार यही रहा है- नेबरहुड फर्स्ट. हमारी विदेश नीति का आधार रहा है, एक्ट ईस्ट पॉलिसी. हमारी विदेश नीति का आधार पहले रहता था, कौन कितनी दूर पर रखते हैं. अब हम कहते हैं कि कौन कितना निकट है. हमने विश्व के साथ एक स्थान बनाया हुआ है और पड़ोस में कम्पटीशन भी काफी है. हमारी कोशिश है सबको साथ लेकर चलने की.

संजय पुगलिया: एक सवाल जो मैं बहुत समय से आपसे पूछना चाहता था, बहुत सारे नीति निर्माता, नेता आपको लेकर विस्मित रहते हैं कि ये जो पॉलिसी बनाते हैं. जो डिजाइन बनाते हैं, कैसे इन चीजों को तैयार करते हैं. मुझे ऐसा लगता है कि आप 'Rare Self Taught Leader' हैं, और उसमें जो सबसे बड़ी भूमिका रही है. वो है 50-55 साल की आपकी यात्रा,

नरेंद्र मोदी: एक तो आपने एक सही आंकलन किया है, ये मेरा सौभाग्य रहा है कि मैं एक परिव्राजक रहा हूँ. इसलिए शायद हिंदुस्तान के 90 परसेंट से ज्यादा डिस्ट्रिक्ट ऐसे होंगे, जहां मैं रातें गुजारी हैं. ये मेरे राजनीतिक जीवन के पहले की बात है. बिना रिजर्वेश के ट्रेन में घूमा हूँ. जनरल बोगी में खड़े-खड़े सफर किया है, पैदल चला हूँ, ट्रक में बैठकर चला हूँ. जो जमीनी दुनिया है, उसी से मैं जुड़ा भी हूँ, उसी से मैं निकला हूँ, और अनुभव बहुत बड़ा है, बहुत काम आता है.

दूसरा, हमारे देश में जितने प्रधानमंत्री आए, वो दिल्ली के गलियारों से ही ज्यादातर निकले हैं. बहुत कम प्रधानमंत्री हैं, जिन्होंने राज्य के सरकारों में काम किया, जिन्होंने किया बहुत कम समय के लिए किया और बहुत लोगों को मौका मिला. मैं एक ऐसा व्यक्ति हूँ, जो एक लंबे समय तक एक प्रगतिशील राज्य का मुख्यमंत्री रहकर आया हो. तो जन-आकांक्षाओं से मैं परिचित था.

जन-आकांक्षाओं और सरकारों के बीच टकराव कहां होता है, कमियां कहां होती हैं, राज्य में मेरा अनुभव था. मेरे पास

(शेष हिस्सा पेज छह पर पढ़िए)

## राम मंदिर न बनने देने के लिए डॉ. मोहन यादव ने कांग्रेस को लताड़ा

महाराजगंज, कुशीनगर, जौनपुर (उत्तरप्रदेश)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कांग्रेस 70 सालों तक भगवान श्रीराम पर ही प्रश्रचिन्ह लगाती रही, उनके होने का प्रमाण मांगती रही। कांग्रेस की गलतियों के कारण देश की चारों तरफ की सीमाएं असुरक्षित थीं, लेकिन अब दुश्मन डरता है। देश के दुश्मनों को नेस्तनाबूद करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी का होना बेहद जरूरी है। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने बिहार के गया पहुंचकर स्थानीय कार्यक्रमों में भी हिस्सा लिया।

श्री यादव उत्तरप्रदेश की महाराजगंज लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्री पंकज चौधरी के समर्थन में नौतनवां, कुशीनगर लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी श्री विजय कुमार दुबे के समर्थन में रामकोला, जौनपुर लोकसभा सीट के भाजपा प्रत्याशी श्री कृपाशंकर सिंह के समर्थन में जौनपुर में आयोजित जनसभाओं को संबोधित करते हुए कहा कि आज देश, प्रदेशों में जो विकास हुआ है वह तो बाजार में नजर आ रहा है और जो भ्रष्टाचारी, गुंडे, बदमाश थे वे जेल में दिख रहे हैं। यह 21वीं सदी का भारत है और यहां पर लोकतंत्र है। किसी की भी तानाशाही नहीं चलेगी। देश की आजादी के बाद से कांग्रेस ने लगातार सनातन धर्म की जड़ों को काटने का प्रयास किया है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि 1947 में देश आजाद हुआ। उसी समय अयोध्या में भगवान श्रीराम का मंदिर बनना



चाहिए था, लेकिन 70 सालों तक कांग्रेस भगवान श्रीराम के होने पर ही प्रश्रचिन्ह लगाती रही। उनके होने का प्रमाण मांगती रही। कांग्रेस के कारण भगवान श्रीराम 70 सालों तक टेंट में ही विराजमान रहे, लेकिन फिर देशवासियों ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी को मौका दिया और उन्होंने किए गए वादे के अनुरूप भगवान श्रीराम को उनके गर्भगृह में विराजमान कराया। अब श्रीराम अपने गर्भगृह में मुस्कुरा रहे हैं। कांग्रेस हमेशा से सनातन धर्म की जड़ों को काटने का कार्य करती रही। हिन्दू-मुसलमानों के बीच फूट डालकर अपनी राजनीतिक रोटी सेंकती रही। कांग्रेस की मानसिकता ही अंग्रेजों वाली रही है।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि पूरे देश में 20-25 परिवार ऐसे हैं, जिन्होंने ही

सारे पदों पर कब्जा कर रखा था। किसी दूसरे को अवसर नहीं मिलता है। यह लोकतंत्र पर एक तरह से कलंक है, इसका निपटारा होना जरूरी है। एक तरफ भाजपा सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास पर काम करती है। एक गरीब परिवार का चाय बेचने वाला बेटा भाजपा में प्रधानमंत्री बनता है, एक गरीब, मजदूर परिवार का बेटा मुख्यमंत्री बनता है, कोई गरीब मंत्री, सांसद, विधायक बनता है। लोकतंत्र का गौरव ऐसा होना चाहिए।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस की गलतियों के कारण चीन ने भारत की एक लाख किलोमीटर से ज्यादा जमीन पर कब्जा जमाया। यह कलंक लंबे समय से हमारे देश के माथे पर है। कांग्रेस के शासनकाल में देश के चारों तरफ की

सीमाएं असुरक्षित थीं। अब प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी के कार्यकाल में देश सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि पहले कभी भी देश में टिफिन बम, साइकिल बम फट जाते थे। लोग घरों से निकलने में डरते थे, लेकिन अब देश से आतंकवाद का नामोनिशान मिट गया है। देश के दुश्मनों को नेस्तनाबूद करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी का होना बेहद जरूरी है।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि कांग्रेस के शासनकाल में घोटाले पर घोटाले होते रहे। एक के बाद एक नए-नए घोटाले सामने आए। पूरे देश की हालत खराब थी। देश की अर्थव्यवस्था बुरी तरह चरमरा गई थी। अर्थशास्त्र के जानकार देश के प्रधानमंत्री थे, लेकिन पदों के पीछे से सोनिया गांधी सरकार चला रही थीं। प्रधानमंत्री

मौन रहते थे। एक साहबजादे कैबिनेट के फैसले सार्वजनिक रूप से फाड़कर फेंकते थे। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि कांग्रेस के लोग हमारे नारों का मजाक उड़ाते थे। 2019 में हमने नारा दिया था अबकी बार 300 पार तो इन्होंने मजाक उड़ाया, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 300 से अधिक सीटें लेकर आए और कांग्रेस एवं इसके घर्मडिया गठबंधन की बोलती बंद की। कांग्रेस ने आजादी के बाद देश को धारा 370 का कलंक दिया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि आज हमारा देश आर्थिक रूप से भी समृद्धशाली, वैभवशाली हुआ है। हम दुनिया की तीसरी बड़ी आर्थिक शक्ति बनने जा रहे हैं। देश में 70 नए हवाई अड्डे बने हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी के नेतृत्व में देश के हर वर्ग और हर क्षेत्र का विकास हुआ है। उन्होंने सेना के जवानों और किसानों को उनका मान-सम्मान दिलाया है। कोविड जैसी महामारी में भी देशवासियों की रक्षा करने का बीड़ा उठाया और प्रत्येक नागरिक की जान बचाई।

मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा कि पहले लार्ड मैकाले ने और फिर कांग्रेस ने हमारी शिक्षा नीति से भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, राजा हरिश्चंद्र का इतिहास ही खत्म कर दिया था। हमारे आने वाली पीढ़ियां कैसे इनका इतिहास जानेंगी? इन्होंने हमारी पीढ़ियों को सनातन धर्म से दूर करने का काम किया। इसके बाद प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदीजी के नेतृत्व में वर्ष 2020 में नई शिक्षा नीति लागू की गई।

## जो भी करूंगा देश के लिए करूंगा

(पेज पांच का शेष भाग पढ़िए)

अनुभव का एक बहुत बड़ा खजाना है।

मैं जीवन भर अपने आपको एक विद्यार्थी मानता हूँ। तो मैं एकेडेमिक दुनिया से सीखने का प्रयास करता हूँ, कि वो क्या सोचते हैं, मैं ब्यूरोक्रेटिक अनुभवों की जो दुनिया है, उसको समझने का प्रयास करता हूँ। मैं क्षेत्र के संबंधित लोगों से मिलता हूँ। जैसे-मैं आजकल बजट बनाता हूँ, इसमें इंफ्रास्ट्रक्चर है तो मैं इससे जुड़े लोगों के साथ वर्कशॉप करता हूँ। किसान है तो किसान का वर्कशॉप करता हूँ। उससे नए आइडियाज आते हैं। ये मैं बजट के पहले भी करता हूँ और बजट के बाद भी करता हूँ। इस बजट में उपयोग नहीं कर पाता हूँ तो अगले बजट में इसका उपयोग करता हूँ।

मैं बहुत खुले मन का इंसान हूँ। दुनिया भर की चीजें, विदेशों से भी लेकर आता हूँ। छोटा सा उदाहरण बताता हूँ- मैं एक बार जापान गया, बहुत साल पहले की बात है। मैं CM तो था, मेरे पास थोड़ा समय था, तो सोचा थोड़ा बाहर जाते हैं। हम पैदल ही जा रहे थे, फुटपाथ पर मैंने देखा कि गोल गोल सी कुछ चीजें लगी थीं। मैंने कभी ऐसा देखा नहीं था, मेरे मन में प्रश्न उठा, मैंने किसी को पूछा कि ये क्या है। उन्होंने बताया कि जो प्रज्ञा चक्षु लोग होते हैं, इनके चलने के लिए ये रखा जाता है। मैं स्टडी किया, मैंने पाया कि बस स्टैंड आया तो उनके लिए मोड़ भी था। मैंने उसकी मोबाइल फोन पर फोटो ली। उस समय भी मैं मोबाइल फोन कैमरा वाला रखता था, मेरा शौक टेक्नोलॉजी का था।



जैसे ही मैं अहमदाबाद पहुंचा, मैंने हमारे सिटी कमिश्नर को फोन किया। मैंने पूछा हमारा कार्रिया का काम हो गया है क्या, फुटपाथ बन गई क्या, उन्होंने कहा- थोड़ी बहुत बन गई है। मैंने कहा- एक काम करो तुम सुबह आ जाओ, मुझे तुम्हें कुछ बताना है। जब सुबह वो आया तो मैंने बताया कि कार्रिया में जो फुटपाथ बनेगी वहां हम ये चीज करेंगे। प्रज्ञा चक्षु का काम आने वाली ये अच्छी चीज मुझे दिखाई है। तुरंत हमने इसको लागू भी कर दिया। यानी कोई भी चीज सीखने का मेरा मन हमेशा रहता है। पॉलिसी जब मैं बनाता हूँ, तब मैं इन सारी चीजों की एक साथ प्रोसेसिंग शुरू हो जाती है।

अब मुझे याद है, जब कोरोना आया, बड़े-बड़े नोबेल प्राइज विनर आकर मुझ पर दबाव डालते थे, नोट छापो-नोट बांटो। वो मुझसे कहते थे कि अमीरों को पैसे दो वरना इकोनॉमी खत्म हो जाएगी, रोजगार खत्म हो जाएगा।

मैंने बिल्कुल वो नहीं किया। मेरी पहली प्रोयोरीटी रही कि गरीब भूखा नहीं रहना चाहिए, गरीब के घर का चूल्हा जलना चाहिए। दूसरा, छोटे-छोटे लोगों को मैं ताकत दूँ, वो चलने चाहिए। मैंने छोटे लोगों को क्रेडिट गारंटी की दिशा में बल दिया। उसका परिणाम ये हुआ कि जो हमारी स्मॉल और मीडियम स्केल की इंडस्ट्री थी, उनकी जिंदगी चलती रही। और मुझे पता था कि अगर मैं तीन महीने इसमें निकाल दूंगा, फिर मैं इन चीजों से बाहर आ जाऊंगा, हुआ ये कि हम बहुत तेजी से बाहर निकल आए। दुनिया आज लड़खड़ा रही है। हम बहुत तेजी से स्थिरता से चले हैं।

जब नीतियां बनती हैं। तो आप एकेडेमिक तराजू से मेरी नीतियों को नहीं तौल सकते हैं। सिर्फ अनुभव के दायरे में भी नहीं देख सकते हैं। दूसरा मेरी नीतियों में एक विषय मेरी बहुत मदद करता है मैं जो भी करूंगा, मेरे देश के लिए करूंगा, कन्फ्यूज नहीं होता

है। दूसरा, वो इंसान नीति सही बना सकता है जिसका कोई निजी स्वार्थ नहीं होता है, मेरी पार्टी का भला होगा या नहीं होगा, मोदी का भला होगा कि नहीं होगा, मोदी के किसी रिश्तेदार का भला होगा कि नहीं होगा। ये सब मेरे जीवन में है ही नहीं। एकदम सीधे तरीके से मेरी पॉलिसी बनती है और उसका मुझे बहुत फायदा होता है।

संजय पुगलिया: आपसे आखिरी सवाल, इसी से जुड़ा हुआ, भारत के बहुत सारे नौजवान लड़के लड़कियां, उनके मन में एक ख्वाब है, बताते नहीं हैं कि उनको भी मोदी जैसा लीडर बनना है। तो आपकी ये जो Rare Quality है, एक तो है Self Taught Leadership की, दूसरी, जिन्होंने आपसे डील किया, वो बताते हैं कि आप Extraordinary good listener हैं, आप सुनते बहुत हैं लोगों को। इस यूथ को आप क्या कहेंगे, अगर उनको आप जैसा बनना हो तो वो क्या करें।

नरेंद्र मोदी: मैंने एक काम किया था, कोविड के समय, मैं वीडियो कॉन्फ्रेंस करता था, मैंने नौजवानों को एक रि-क्लेस्ट की थी, आप घर में हो आजकल मोबाइल और कैमरा वगैरह भी है। घर में दादा-दादी भी हैं, उनका वीडियो रिकॉर्डिंग कीजिए, उनका इंटरव्यू कीजिए, कि जब वो स्कूल में पढ़ते थे तो कैसा होता था। उनके समय शादियां कैसे होती थीं, पहले जब घर छोटे होते थे और मेहमान आते थे तो कैसे रहते थे। पहले बारात 5-7 दिन रहती थी, तो कैसे रहते थे। क्या होगा इससे कि अपने परिवार के लोग कैसी जिंदगी जीते-जीते यहां तक पहुंचे हैं, आप उनके कनेक्ट करोगे, मैं मानता हूँ कि हमारे देश के नौजवानों ने आजादी के बाद भारत की विकास यात्रा कैसे चली है, इसको खोजी मन से खोजना चाहिए। पहले कैसे होता था, कोयले वाली ट्रेनें चलती थीं तो कोयला कैसे आता था ट्रेन चलाने वाले कैसे इतनी आग में रहते थे। जो नौजवान इस 75 साल की यात्रा को जानने समझने का प्रयास करेगा, वो आगे की यात्रा का हिस्सेदार बनेगा। मेरे आगे के लोगों ने इतना कुछ किया है, अब मैं कुछ करूँ। ये उसकी प्रेरणा बनेगा। दूसरा- बनने का ख्वाब लेकर चलेगा तो, निराशा जल्द आ जाएगी, कुछ करने का इरादा लेकर निकलेगा तो करते करते, धीरे-धीरे संतोष का विस्तार होता जाएगा। संतोष का विस्तार सामर्थ्य का विस्तार बन जाता है और वो उसको लीडर बना सकता है, और मैं तो चाहता हूँ कि देश में वैसी ही लीडरशिप निकले।

**Public Meeting-1**

Time- 11:10 AM

Place- Karanjia NAC,  
Surubali, Ward No.-1,  
Gollei Chhak Sekhar  
Colony Ground,  
Dist.- Mayurbhanj

**Public Meeting-2**

Time- 01:00 PM

Place- Asurali Structure  
Field, Dhamnagar,  
Dist.- Bhadrak

**Public Meeting-3**

Time- 02:35 PM

Place- Barachana  
Mahatshav Padia,  
Dist. Jajpur

**Public Meeting-4**

Time- 04:10 PM

Place- Erasama Mini  
Stadium,  
Dist.- Jagatsinghpur

# PUBLIC MEETINGS IN ODISHA

## 23<sup>RD</sup> MAY 2024





 /BJP4India  
 Watch Live [www:// bjp.org/bjplive](http://www.bjp.org/bjplive)

प्रधानमंत्री  
श्री नरेन्द्र मोदी की  
हरियाणा और पंजाब में  
**जनसभाएं**

23 मई, 2024

**जनसभा 1**  
दोपहर 2 बजे  
भिवानी-महेन्द्रगढ़,  
हरियाणा

**जनसभा 2**  
शाम 4.30 बजे  
पटियाला, पंजाब



(( )) (f) (X) /BJP4India  
लाइव देखें [www:// bjp.org/bjplive](http://www.bjp.org/bjplive)